कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



मुद्रण क्रांति और उसका असर

- छापेख़ाने का आविष्कार महज़ तकनीकी दृष्टि से नाटकीय बदलाव की शुरुआत नहीं था।
- पुस्तक उत्पादन के नए तरीक़ों ने लोगों की ज़िंदगी बदल दी।
- इसकी बदौलत सूचना और ज्ञान से, संस्था और सत्ता से उनका रिश्ता ही बदल गया।
- इससे लोकचेतना बदली और बदला चीज़ों को देखने का नज़रिया।

नया पाठक वर्ग

- छापेख़ाने के आने से एक नया पाठक वर्ग पैदा हुआ।
- छपाई से किताबों की क़ीमत कम हुई।
- किताब की हर प्रति के उत्पादन में जो वक़्त और श्रम लगता था, वह कम हो गया, और बड़ी तादाद में प्रतियाँ छापना आसान हो गया।
- बाज़ार किताबों से पट गए।
- पाठक वर्ग भी बृहत्तर होता गया।
- किताबों तक पहुँच आसान होने से पढ़ने की एक नयी संस्कृति विकसित हुई।
- अब तक आमलोग मौखिक संसार में जीते थे।
- वे धार्मिक किताबों का वाचन सुनते थे।
- गाथा-गीत उनको पढ़कर सुनाए जाते थे।
- क़िस्से भी उनके लिए बोलकर पढ़े जाते थे।
- ज्ञान का मौखिक लेन-देन ही होता था।
- लोगबाग समूह में ही दास्तान सुनते, या कोई आयोजन देखते, आए थे।
- वे तन्हाई में, या ख़ामोशी से, पढ़ने के आदी नहीं थे।
- छपाई क्रांति के पहले किताबें न केवल मँहगी थीं, बल्कि उन्हें पर्याप्त मात्रा में छापना भी असंभव था।
- अब किताबें समाज के व्यापक तबक़ों तक पहुँच सकती थीं।
- अगर पहले की जनता श्रोता थी, तो कह सकते हैं कि अब पाठक-जनता अस्तित्व में आ गई थी।
- लेकिन यह संक्रमण सरल नहीं था।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- किताबें सिर्फ साक्षर ही पढ़ सकते थे और यूरोप के अधिकांश देशों में 20वीं सदी तक साक्षरता की दर सीमित थी।
- प्रकाशकों के लिए सवाल था कि लोगों में छपी किताब के प्रति दिलचस्पी कैसे जगाएँ?
- इसके लिए उन्हें ध्यान रखना था कि मुद्रित कृति की पहुँच व्यापक होनी चाहिए।
- जो स्वयं नहीं पढ़ पाते थे, वे भी पढ़े गए को सुनकर उसका लुत्फ तो उठाते ही थे।
- इसलिए मुद्रकों ने लोकगीत और लोककथाएँ छापनी शुरू कर दीं।
- ये किताबें आमतौर पर तसवीरों से खूब सजी-धजी सचित्र होती थीं।
- फिर इन्हें सामूहिक ग्रामीण सभाओं में या शहरी शराबघरों में गाया-सुनाया जाता था।
- इस तरह मौखिक संस्कृति मुद्रित संस्कृति में दाख़िल हो गई।
- मौखिक और मुद्रित संस्कृतियों के बीच की विभाजक रेखा धुँधली पड़ गई।
- श्रोता और पाठक वर्ग एक-दूसरे में घुल-मिल गए।

धार्मिक विवाद और प्रिंट का डर

- छापेख़ाने से विचारों के व्यापक प्रचार-प्रसार के साथ-साथ बहस-मुबाहिसे के द्वार खुले।
- स्थापित सत्ता के विचारों से असहमत होने वाले लोग भी अब अपने विचारों को छापकर उन्हें फैला सकते थे।
- छपे हुए संदेश के ज़रिए वे लोगों को अलग ढंग से सोचने के लिए मना सकते थे।
- साथ ही उनको कोई कार्रवाई करने के लिए प्रेरित कर सकते थे।
- ज़ाहिर है कि इस बात का जीवन के कई क्षेत्रों में गंभीर महत्त्व था।
- हर कोई मुद्रित किताब को लेकर खुश नहीं था।
- जिन्होंने इसका स्वागत भी किया, उनके मन में इसको लेकर कई डर थे।
- कई लोगों को छपी किताब के व्यापक प्रसार और छपे शब्द की सुगमता को लेकर यह आशंका थी कि न जाने इसका आमलोगों के ज़ेहन पर क्या असर हो।

जे.वी. श्ले, लाम्प्रीमेरी (छापाख़ाना) 1739



- यह आधुनिक यूरोप के प्रारंभ में प्रिंट के आगमन का उत्सव मनाते हुए छपे कई चित्रों में से एक है।
- इस चित्र में छापाख़ाना लेकर एक देवी स्वर्ग से उतर रही है।
- इस देवी के आजू-बाजू मिनर्वा (विद्या की देवी) और मर्करी (दूत-देव, विवेक का प्रतीक) हैं।
- तसवीर के आगे के हिस्से में अलग-अलग देशों के छः अग्रणी मुद्रकों की छवियों में औरतें हैं।
- बीच में बाईं ओर घेरे के अंदर गुटेन्बर्ग की तसवीर है।

Download Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- यह भी भय था कि अगर छपे हुए और पढ़े जा रहे पर कोई नियंत्रण न होगा तो लोगों में बाग़ी और अधार्मिक विचार पनपने लगेंगे।
- अगर ऐसा हुआ तो 'मूल्यवान' साहित्य की सत्ता ही नष्ट हो जाएगी।
- यह चिंता धर्मगुरुओं और सम्राटों तथा कई लेखकों एवं कलाकारों द्वारा व्यक्त की गई
- यह चिंता इन नव-मुद्रित और नव-प्रसारित साहित्य की व्यापक आलोचना का आधार बनी।

जीवन के एक क्षेत्र-धर्म में इसका असर

- धर्म-सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी 95 स्थापनाएँ लिखीं।
- इसकी एक छपी प्रति विटेनबर्ग के गिरजाघर के दरवाज़े पर टाँगी गई।
- इसमें लूथर ने चर्च को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी थी।
- जल्द ही लूथर के लेख बड़ी तादाद में छापे और पढ़े जाने लगे।
- इसके नतीजे में चर्च में विभाजन हो गया और प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार की शुरुआत हुई।
- कुछ ही हफ़्तों में न्यू टेस्टामेंट के लूथर द्वारा किये गये अनुवाद की 5000 प्रतियाँ बिक गईं, और 3 महीने के अंदर दूसरा संस्करण निकालना पड़ा।
- प्रिंट के प्रति तहेदिल से कृतज्ञ लूथर ने कहा, ''मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफ़ा।''
- कई इतिहासकारों का यह खयाल है कि छपाई ने नया बौद्धिक माहौल बनाया।
- छपाई से ही नये विचारों के प्रसार में मदद मिली।

प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार

- 16वीं सदी यूरोप में रोमन कैथलिक चर्च में सुधार का आंदोलन।
- मार्टिन लूथर प्रोटेस्टेंट सुधारकों में से एक थे।
- इस आंदोलन से कैथलिक ईसाई मत के विरोध में कई धाराएँ निकलीं।

मुद्रण और प्रतिरोध

- छपे हुए लोकप्रिय साहित्य के बल पर कम शिक्षित लोग धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित हुए।
- 16वीं सदी की इटली के एक किसान मेनोकियो ने अपने इलाके में उपलब्ध किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया था।
- उन किताबों के आधार पर उसने बाइबिल के नए अर्थ लगाने शुरू कर दिए।
- उसने ईश्वर और सृष्टि के बारे में ऐसे विचार बनाए कि रोमन कैथलिक चर्च उससे क्रुद्ध हो गया।
- ऐसे धर्म-विरोधी विचारों को दबाने के लिए रोमन चर्च ने इन्क्वीज़ीशन शुरू किया।
  इन्क्वीजीशन :- धर्म द्रोहियों की शिनाख्त कर दुरूस्त करने वाली संस्था।
- मेनोकियो को दो बार पकड़ा गया और आख़िरकार उसे मौत की सज़ा दे दी गई।
- धर्म पर उठाए जा रहे सवालों से परेशान रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं पर कई तरह की पाबंदियाँ लगाईं।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- 1558 ई. से प्रतिबंधित किताबों की सूची रखने लगे।

धर्म-विरोधी : वह इनसान या विचार जो चर्च की मान्यताओं से असहमत हो।

- मध्यकाल में चर्च विधर्मियों के प्रति सख़्त था।
- उसको लगता था कि लोगों की आस्था, उनके विश्वास पर सिर्फ़ उसका अधिकार है, तथा चर्च की बात ही अंतिम है।

किताब का डर

- लातिन के विद्वान और कैथलिक धर्मसुधारक इरैस्मस भी प्रिंट को लेकर बहुत आशंकित रहते थे।
- उन्होंने कैथोलिक धर्म की ज्यादतियों की आलोचना की।
- उन्होंने लूथर से दूरी बनाकर रखी थी।
- उन्होंने एडेजेज़ (1508) में लिखा–
- 'किताबें भिनभिनाती मक्खियों की तरह हैं, दुनिया का कौन-सा कोना है, जहाँ ये नहीं पहुँच जातीं?
- हो सकता है कि जहाँ-तहाँ, एकाध जगह जानने लायक चीज़ें भी बताएँ, लेकिन इनका ज़्यादा हिस्सा तो विद्वान के लिए हानिकारक ही है।
- बेकार ढेर हैं, क्योंकि अच्छी चीज़ों की अति भी हानिकारक ही है।
- इनसे बचना चाहिए।
- मुद्रक दुनिया को सिर्फ़ तुच्छ चीज़ों से ही नहीं पाट रहे, बल्कि बकवास, बेवकूफ़, सनसनीख़ेज़, धर्मविरोधी, अज्ञानी, और षड्यंत्रकारी किताबें छापते हैं।
- और उनकी तादाद ऐसी है कि मूल्यवान साहित्य का मूल्य ही नहीं रह जाता।'

द मैकॅबर डान्स (वीभत्स नाच)।

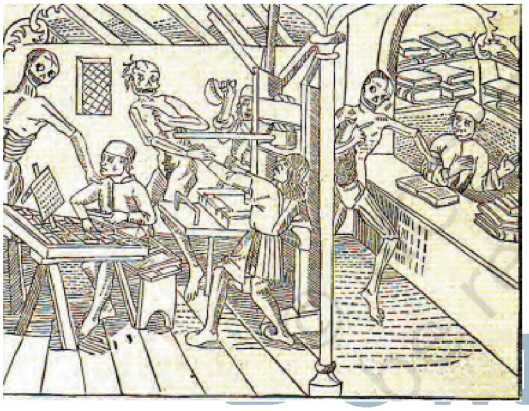

- इस 16वीं सदी की तसवीर में, छपाई का ख़ौफ़ किस नाटकीयता से पेश किया जा रहा था, यह देखा जा सकता है।
- इस बेहद दिलचस्प वुडकट (तख़्ती-छाप) तसवीर में मुद्रण के आगमन को दुनिया के अंत से जोड़ा गया है।
- मुद्रक के वर्कशॉप को मौत के नाच का मंच बताया गया है।
- मुद्रक और उसके मज़दूर कंकालों के नियंत्रण में हैं, तथा उनसे मनचाही चीज़ें छपवाते हैं।

Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here